IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन के लागत – लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण

[1] दीपिका शर्मा, [2] डॉ. लक्ष्मण परवाल
[1]शोधार्थी , [2]प्राध्यापक
[1] स्वामी विवेकानन्द वाणिज्य महाविद्यालय, रतलाम
[1] विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, भारत

**सारांश** – सेरीकल्चर (रेशम उत्पादन) एक कृषि आधारित उद्योग है। वर्तमान में सेरीकल्चर देश के ग्रामीण जनजीवन के लिए आय तथा रोजगार का एक नवीन स्त्रोत बन चुका है। ग्रामीण जन जीवन के उत्थान में सेरीकल्चर का अहम् योगदान है। प्रस्तुत शोध में मध्यप्रदेश के रतलाम जिले में रेशम उत्पादन तथा सोयाबीन उत्पादन में लागत और लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत है। रतलाम जिला में रेशम उत्पादन के क्षेत्र में पंजीकृत 50 हितग्राहियों से यादृच्छिक रूप से समंको का संकलन किया गया है। ये वे हितग्राही है जो कि रेशम उत्पादन के साथ–साथ सोयाबीन उत्पादन का भी उत्पादन करते है। ऑकडों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता हैं कि कुल लागत के आधार पर रेशम तथा सोयाबीन दोनों के उत्पादन में सर्वाधिक व्यय मानव श्रम के रूप में क्रमशः 41,280 रू तथा 6,450 रू वहन किया गया तथा ओ.पी.सी. गणना के आधार पर रेशम उत्पादन में रासायनिक उर्वरक पर सबसे अधिक 5,540 रू का व्यय किया गया, जबकि इसकी तुलना में सोयाबीन उत्पादन पर सबसे अधिक व्यय अन्य व्यय के रूप में 6,170 रू का किया गया। जिले में जहॉ सोयाबीन की मात्र 1 फसल (प्रति वर्ष प्रति एकड) ली जाती है, वहीं रेशम की औसतन 3 फसलें (प्रति वर्ष प्रति एकड) उत्पादित की जाती है। कुल लागत गणना के आधार पर रेशम तथा सोयाबीन दोनों के उत्पादन में हितग्राही को क्रमशः 55,025 रू तथा 7,300 रू की हानि होती है जबकि ओ.पी.सी. गणना के आधार रेशम तथा सोयाबीन के उत्पादन में हितग्राही को क्रमशः 2,749 रू तथा 1,710 रू का लाभ प्राप्त होता है।

## प्रस्तावना

सामान्यतः सेरीकल्चर प्राकृत रेशम उत्पादन की एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है। सेरीकल्चर (रेशम उत्पादन) लेटिन भाषा के शब्द 'सेरिओ' से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है – रेशम। वास्तव में रेशम एक महीन तंतु है जो कि रेशम के कीडों द्वारा निर्मित किया जाता है, अतः सेरीकल्चर का अर्थ है – रेशम के कीडों के पालन – पोषण द्वारा रेशम का उत्पादन। विश्व में रेशम की चार प्रजातियों का उत्पादन किया जाता है – मलबरी, टसर, इरी तथा मुॅगा [1]। सम्पूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है, जहॉ रेशम की चारों प्रजातियों का उत्पादन किया जाता है। वर्तमान में रेशम उत्पादन में भारत का चीन के बाद द्वितीय स्थान है। वर्ष 2018–19 में सम्पूर्ण विश्व में कुल 1,09,111 मीट्रिक टन रेशम का उत्पादन किया गया। जिसका 62.8% भाग (68,600 मीट्रिक टन) [2] चीन का तथा 32.5% भाग (35,820 मीट्रिक टन) भारत का है। भारत में रेशम उत्पादन को राज्यों के आधार पर दो वर्गो में विभक्त किया गया है – पारंपरिक राज्य तथा गैर पारंपरिक राज्य। पारम्परिक राज्य वे राज्य है, जहॉ रेशम उत्पादन कई दशको से किया जा रहा है। जबकि गैर पारम्परिक राज्य वे राज्य है, जहॉ रेशम उत्पादन विगत कुछ वर्षो से ही होने लगा है। इनमें से एक मध्यप्रदेश है जो कि रेशम उत्पादन की दृष्टि से गैर पारंपरिक राज्यों की श्रेणी में आता है [3]। वर्ष 2018–19 में मध्यप्रदेश में 100 मीट्रिक टन रेशम का उत्पादन किया गया जो कि वर्ष 2018–19 में भारत में उत्पादित रेशम का मात्र 0.28% है। इस प्रकार मध्यप्रदेश रेशम उत्पादन में बहुत अधिक पिछडा प्रदेश है। मध्यप्रदेश के सभी 10 संभागो में रेशम विभाग कार्यालय स्थित है। जिसके द्वारा संभाग स्तर पर सभी जिलों में रेशम उत्पादन के विकास का कार्य किया जा रहा हैं। इन जिलो में से एक रतलाम जिला है, जो कि उज्जैन संभाग के अंतर्गत मालवा के पठार पर स्थित है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी के द्वारा रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन के उत्पादन में लगने वाली लागत तथा उससे होने वाले लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

## अध्ययन का क्षेत्र तथा विधि

प्रस्तुत शोध कार्य मध्यप्रदेश के रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन के लागत – लाभ विश्लेषण को प्रस्तुत करता है। रतलाम जिला रेशम के संबंध में मध्यप्रदेश के गैरपारंपरिक क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों जैसे – भदवासा, बडोदिया, बोरखेडा, खारवाखुर्द, लंगरखेडी, काण्डरवासा, रेवासा, सुजलाना, पलाश, ईसरथुनी, ईमलीपाडा, रानीसिंग आदि में रेशम का उत्पादन किया जाता है। इन क्षेत्रों के अधिकांश हितग्राही किसान आदिवासी समुदाय के है। जिनका जीवन स्तर बहुत निम्न है। ये किसान अपना जीवनयापन या तो खेती के द्वारा करते है या फिर मजदूरी के द्वारा। शोधार्थी के द्वारा इन ग्रामीण क्षेत्रों में से यादृच्छिक रूप से 50 हितग्राहियों को चुना गया है तथा इनसे रेशम उत्पादन संबंधित समंको का संकलन किया गया है। ये हितग्राही इस क्षेत्र में शहतूत की खेती से ककून उत्पादन तक का सम्पूर्ण कार्य करते है। समंको का संग्रहण करते समय शोधार्थी द्वारा इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि समंको का संग्रहण उन हितग्राहियों से किया गया है जो कि रेशम उत्पादन के साथ–साथ सोयाबीन का उत्पादन भी करते है। समंको का संग्रहण शोधार्थी स्वयं के द्वारा बनाई गई अनुसूची के आधार पर व्यक्तिगत पूछताछ के द्वारा किया गया है। रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन का तुलनात्मक विश्लेषण हेतु शोधार्थी द्वारा कुल लागत विधि एवं ओ.पी.सी. लागत (अर्थात जेब के बाहर की लागत) का उपयोग किया गया है। इन दो विधियों से ऑकडों का विश्लेषण करके लागत और लाभ को इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. रतलाम जिले में रेशम उत्पादन की समग्र लागत एवं लाभ का विश्लेषण करना।
2. रतलाम जिले में सोयाबीन उत्पादन की समग्र लागत एवं लाभ का विश्लेषण करना।
3. रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन की समग्र लागत एवं लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

## परिणाम एवं विवेचना

रेशम उत्पादन की प्रक्रिया तीन चरण में सम्पूर्ण होती है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में इन तीन चरणों (1) शहतूत के उद्यान की स्थापना, (2) शहतूत की पत्तियों तथा (3) ककून के उत्पादन को गणना में सम्मिलित किया गया है।

### (1) रतलाम जिले में शहतूत उद्यान की स्थापना में लागत

रेशम उत्पादन हेतु सर्वप्रथम शहतूत के उद्यान की स्थापना की जाती है क्योंकि शहतूत की पत्तियॉ ही रेशम के कीडों का मुख्य आहार होती है। शोधार्थी द्वारा मानव श्रम, पशु श्रम, मशीन श्रम, खाद, रासायनिक उर्वरक, सिंचाई, अन्य व्यय, भू–राजस्व तथा कार्यशील पूंजी पर ब्याज के आधार पर प्रति एकड में शहतूत उद्यान की स्थापना की लागत की गणना की गई है। शहतूत के उद्यान की स्थापना में लागत का विवरण निम्न तालिका क्रमांक 1 में वर्णित है।

**तालिका क्रमांक 1 – रतलाम जिले में शहतूत उद्यान की स्थापना लागत का विवरण (प्रति एकड)**

| क. | विवरण | इकाई | मात्रा | कुल लागत (टी.सी.) (रू) | कुल लागत में अंश (%) | ओ.पी.सी. लागत (रू) | ओ.पी.सी. लागत में अंश (%) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मानव श्रम | मा.दि. | 171 | 30,000 | 73.16 | – | – |
| 2 | पशु श्रम | घण्टे | 08 | 1,107 | 2.69 | 1,107 | 15.38 |
| 3 | मशीन श्रम | घण्टे | 04 | 1,880 | 4.58 | 1,880 | 26.13 |
| 4 | खाद | मी.टन | 1.5 | 1,160 | 2.82 | 1,160 | 16.12 |
| 5 | रासायनिक उर्वरक | किग्रा. | 77 | 1,846 | 4.50 | 1,846 | 25.66 |
| 6 | सिंचाई (बिजली) | – | – | – | – | – | – |
| 7 | अन्य | रू | | 1,100 | 2.68 | 1,100 | 15.29 |
| 8 | भू–राजस्व | रू | | 100 | 0.24 | 100 | 1.39 |
| 9 | कार्यशील पूंजी पर ब्याज 10.25 % | रू | | 3,812 | 9.29 | – | – |
| | **कुल** | | | **41,005** | **100** | **7,193** | **100** |

स्त्रोत – सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त समंको के आधार पर

शोधार्थी द्वारा लागत की गणना हेतु दो विधियो को प्रयोग में लाया गया है।

(1) कुल लागत विधि – कुल लागत (टी.सी. लागत) से तात्पर्य उस लागत से है जिसमें हितग्राही द्वारा किये गये सम्पूर्ण व्यय को गणना में सम्मिलित किया जाता है।

(2) जेब से बाहर की लागत या नकद लागत विधि – जेब से बाहर की लागत (ओ.पी.सी. लागत) से तात्पर्य उस लागत से है जिसमें हितग्राही द्वारा किये गए नकदी व्ययो को ही गणना में सम्मिलित किया जाता है।

तालिका क्रमांक 1 में कुल लागत एवं ओ.पी.सी. लागत के आधार पर शहतूत उद्यान की स्थापना लागत प्रदर्शित है। तालिका से स्पष्ट है कि जिले में शहतूत उद्यान की स्थापना में 41,005 रू प्रति एकड की लागत आती है। इस लागत में से सर्वाधिक 30,000 रू (73.16 %) की लागत मानव श्रम पर वहन की गई। इसके पश्चात कार्यशील पूंजी पर

ब्याज, पशु श्रम, मशीन श्रम, खाद, रासायनिक उर्वरक, अन्य व्यय तथा भू–राजस्व पर क्रमशः 3,812 रू (9.29 %), 1,107 रू (2.69 %), 1,880 रू (4.58 %), 1,160 रू (2.82 %), 1,846 रू (4.5 %), 1,100 रू (2.68 %) तथा 100 रू (0.24 %) की लागत दर्ज की गई। जिले में सिंचाई (बिजली) पर किसी भी प्रकार का भुगतान किसान को नहीं करना पडता है क्योंकि शासन द्वारा जिले के किसानों को निःशुल्क बिजली प्रदान की जाती है।

तालिका क्रमांक 1 में ओ.पी.सी. लागत के आधार पर शहतूत उद्यान की स्थापना में लगी लागत प्रदर्शित है। तालिका से स्पष्ट है कि जिले में शहतूत उद्यान की स्थापना में 7,193 रू प्रति वर्ष प्रति एकड की लागत आई। इस लागत में सर्वाधिक 1,880 रू (26.13 %) की लागत मशीन श्रम पर वहन की गई। इसके पश्चात रासायनिक उर्वरक, पशु श्रम, खाद, अन्य तथा भू–राजस्व पर क्रमशः 1,846 रू (25.66 %), 1,107 रू (15.38 %), 1,160 रू (16.12 %), 1,100 रू (15.29 %) तथा 100 रू (1.39 %) की लागत दर्ज की गई।

## (2) रतलाम जिले में शहतूत की पत्तियों, ककून तथा सोयाबीन के उत्पादन लागत की तुलना

शहतूत उद्यान की स्थापना के बाद द्वितीय चरण में शहतूत की पत्तियों तथा तृतीय चरण में ककून का उत्पादन किया जाता है। शहतूत उद्यान को एक बार स्थापित करने के बाद उद्यान से लगभग 15 वर्षो तक शहतूत की पत्तियाँ ली जा सकती है। रतलाम जिले में शहतूत की पत्तियों तथा ककून के उत्पादन में आई लागत का समग्र विवरण निम्न तालिका क्रमांक 2 में वर्णित है।

**तालिका क्रमांक 2 – रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन लागत**

| रेशम उत्पादन की लागत | | | | सोयाबीन उत्पादन की लागत | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्र. | विवरण | कुल लागत (रू) | ओ.पी.सी. लागत (रू) | कुल लागत (रू) | ओ.पी.सी. लागत (रू) |
| 1 | शहतूत उद्यान की स्थापना कुल लागत | 41,005 | 7,193 | – | – |
| 2 | स्थायी लागत (अ) (प्रति एकड शहतूत उद्यान की स्थापना में अंश) | 2,733 | 479 | – | – |
| | रेशम उत्पादन की परिवर्तनशील लागत (शहतूत पत्तियों तथा ककून उत्पादन की परिवर्तनशील लागत) | | | सोयाबीन उत्पादन की परिवर्तनशील लागत | |
| | मानव श्रम | 41280 (69.13%) | – | 6,450 (26.78%) | – |
| | मशीन श्रम | – | – | 1,790 (7.43%) | 1,790 (11.63%) |
| | पशु श्रम | 3,322 (5.56%) | 3,322 (25.78%) | 2,040 (8.47%) | 2,040 (13.25%) |
| | खाद | 2,320 (3.88%) | 2,320 (18.00%) | 1,920 (7.97%) | 1,920 (12.47%) |
| | रासायनिक उर्वरक | 5,540 (9.27%) | 5,540 (43.00%) | 3,370 (13.99%) | 3,370 (21.89%) |
| | सिंचाई (बिजली) | – | – | – | – |
| | अन्य | 1,600 (2.67%) | 1,600 (12.42%) | 6,170 (25.62%) | 6,170 (40.09%) |
| | भू–राजस्व | 100 (0.16%) | 100 (0.77%) | 100 (0.41%) | 100 (0.64%) |
| | कार्यशील पुंजी पर ब्याज 10.25 % | 5,551 (9.29%) | – | 2,238 (9.29%) | – |
| 3 | परिवर्तनशील लागत (ब) | 59,713 (100%) | 12,882 (100%) | 24,078 (100%) | 15,390 (100%) |
| | रेशम उत्पादन की स्थायी लागत | | | सोयाबीन उत्पादन की स्थायी लागत | |
| 4 | भवन तथा उपकरण (मूल्यह्रास) | 8,125 | 00.00 | 301 | 00.00 |
| 5 | स्थायी पूंजी पर ब्याज @ 6.95 % प्रति वर्ष | 564 | 00.00 | 21 | 00.00 |
| 6 | कुल स्थायी लागत (स) | 8,689 | 00.00 | 322 | 00.00 |
| 7 | उत्पादन लागत (द = अ + ब) | 62,446 | 13,361 | 24,078 | 15,390 |
| 8 | कुल उत्पादन लागत (स+द) | 71,135 | 13,361 | 24,400 | 15,390 |

स्त्रोत – सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त समंको के आधार पर।

नोट – शहतूत उद्यान स्थापना की कुल लागत की गणना को 15 वर्षो में विभाजित किया गया है।

तालिका क्रमांक 2 में कुल लागत एवं ओ.पी.सी. लागत के आधार पर शहतूत की पत्तियों तथा ककून उत्पादन की कुल लागत प्रदर्शित है। शहतूत की पत्तियों तथा ककून के उत्पादन में कुल परिवर्तनशील लागत 59,713 रू दर्ज की गई। इस लागत का सर्वाधिक व्यय मानव श्रम पर 41,280 रू (69.13%) किया गया। इसके बाद कार्यशील पूंजी पर ब्याज, रासायनिक उर्वरक, पशु श्रम, खाद, अन्य व्यय तथा भू–राजस्व पर क्रमशः 5,551 रू (9.29%), 5,540 रू (9.27%), 3,322 रू (5.56%), 2,320 रू (3.88%), 1,600 रू (2.67%) तथा 100 रू (0.16%) की लागत आई।

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि, ओ.पी.सी. गणना के आधार पर शहतूत की पत्तियों तथा ककून के उत्पादन में 12,882 रू की लागत आई। इस लागत का सर्वाधिक व्यय 5,540 रू (43.00%) रासायनिक उर्वरक तथा 3,322 रू

(25.78%) पशु श्रम पर वहन किया गया। इसके पश्चात खाद, अन्य तथा भू–राजस्व पर क्रमशः 2,320 रू (18.00 %), 1,600 रू (12.42%) तथा 100 रू (0.77 %) की लागत दर्ज की गई।

**चित्र क्रमांक 1 – रेशम तथा सोयाबीन की परिवर्तनशील लागत की तुलना (कुल लागत के आधार पर)**

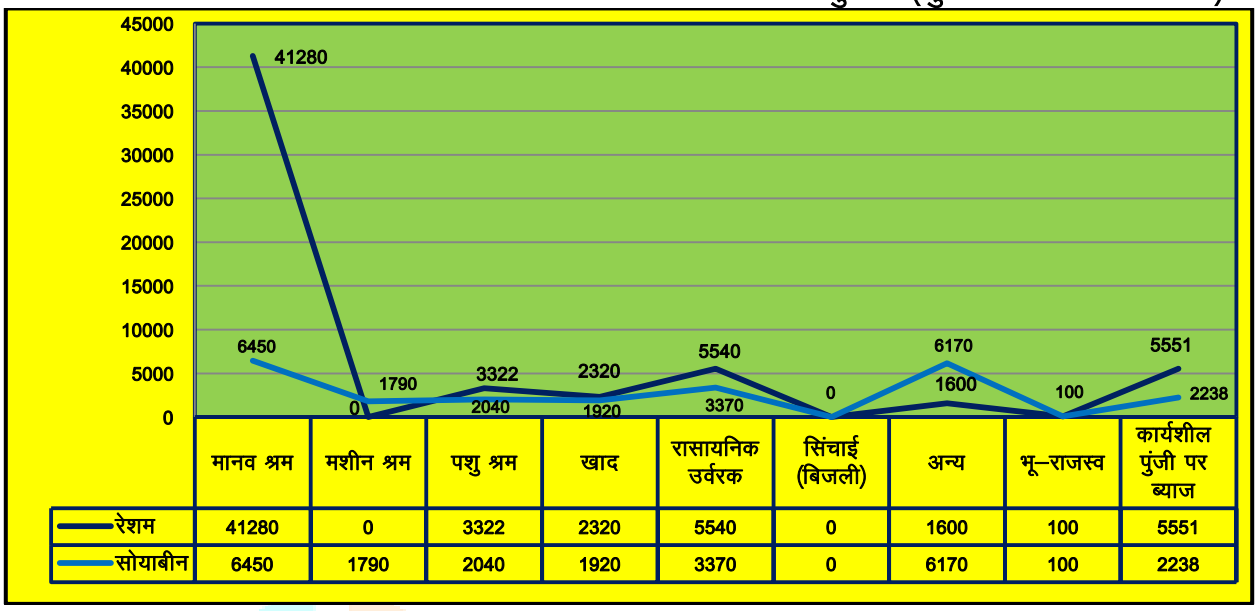


| | मानव श्रम | मशीन श्रम | पशु श्रम | खाद | रासायनिक उर्वरक | सिंचाई (बिजली) | अन्य | भू–राजस्व | कार्यशील पुंजी पर ब्याज |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रेशम | 41280 | 0 | 3322 | 2320 | 5540 | 0 | 1600 | 100 | 5551 |
| सोयाबीन | 6450 | 1790 | 2040 | 1920 | 3370 | 0 | 6170 | 100 | 2238 |

**चित्र क्रमांक 2 – रेशम तथा सोयाबीन की परिवर्तनशील लागत की तुलना (ओ.पी.सी. लागत के आधार पर)**

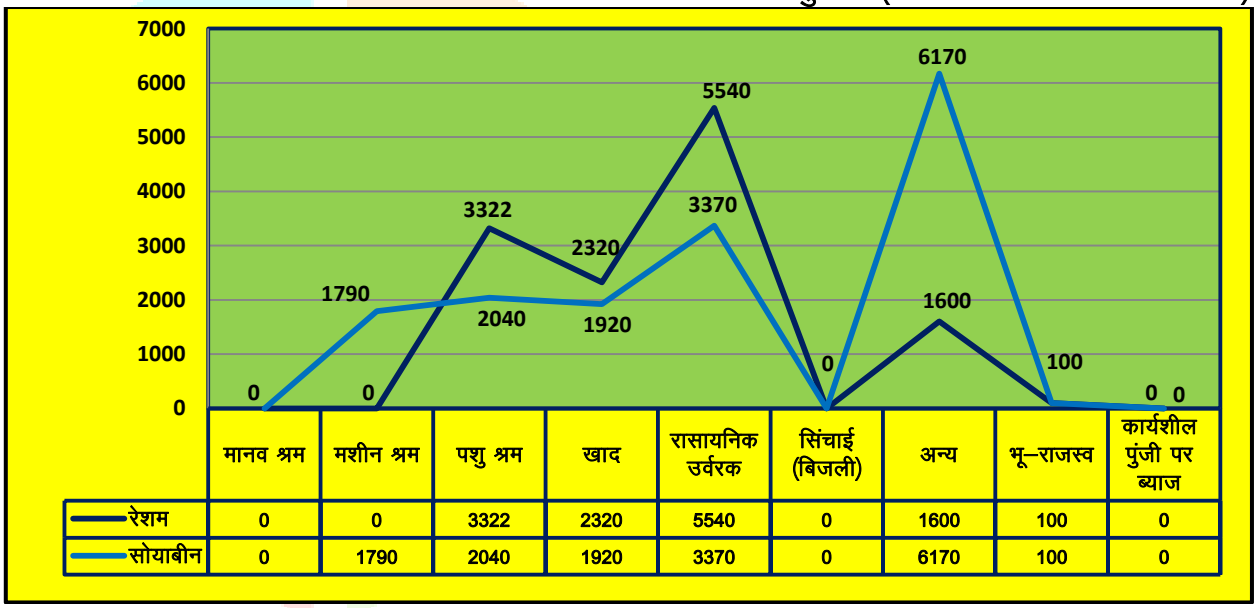


| | मानव श्रम | मशीन श्रम | पशु श्रम | खाद | रासायनिक उर्वरक | सिंचाई (बिजली) | अन्य | भू–राजस्व | कार्यशील पुंजी पर ब्याज |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रेशम | 0 | 0 | 3322 | 2320 | 5540 | 0 | 1600 | 100 | 0 |
| सोयाबीन | 0 | 1790 | 2040 | 1920 | 3370 | 0 | 6170 | 100 | 0 |

जिले में हितग्राहियों को ककून उत्पादन के लिए DFLS (स्वस्थ समूह) तथा कीटनाशक शासन द्वारा निःशुल्क प्रदान किये जाते है। अतः इन्हे तालिका में सम्मिलित नहीं किया गया है। कृमिपालन हेतु हितग्राही द्वारा कृमिपालन भवन एवं कृमिपालन उपकरणों तथा कृषि उपकरणों का उपयोग किया जाता है। शोधार्थी द्वारा कृमिपालन भवन, उपकरण एवं कृषि उपकरणों पर मूल्यहास तथा स्थायी पूंजी पर ब्याज की गणना की गई है। तालिका क्रमांक 2 में वर्णित आँकडों से स्पष्ट है कि रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन पर कुल स्थायी लागत क्रमशः 8,689 रू तथा 322 रू दर्ज की गई एवं रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन पर परिवर्तनशील लागत क्रमशः 59,713 रू तथा 24,078 रू दर्ज की गई । इस प्रकार कुल लागत गणना के आधार पर रेशम उत्पादन पर कुल लागत 71,135 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) तथा सोयाबीन उत्पादन पर कुल लागत 24,400 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) दर्ज की गई।

तालिका क्रमांक 2 में रेशम तथा सोयाबीन के उत्पादन की ओ.पी.सी. लागत की गणना में स्थायी लागत को शामिल नहीं किया गया है। इस प्रकार रेशम उत्पादन की कुल उत्पादन ओ.पी.सी. लागत 13,361 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) तथा सोयाबीन उत्पादन की कुल उत्पादन ओ.पी.सी. लागत 15,390 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) दर्ज की गई।

तालिका क्रमांक 2 में कुल लागत एवं ओ.पी.सी. लागत के आधार पर सोयाबीन उत्पादन की कुल लागत प्रदर्शित है। सोयाबीन उत्पादन में सर्वाधिक व्यय मानव श्रम पर 6,450 रू (26.78%) किया गया। इसके बाद अन्य, रासायनिक उर्वरक, कार्यशील पूंजी पर ब्याज, पशु श्रम, खाद, मशीन श्रम तथा भू–राजस्व पर क्रमशः 6,170 रू (25.62%), 3,370 रू (13.40%), 2,338 रू (9.29%), 2,040 रू (8.11%), 1,920 रू (7.63%), 1,790 रू (7.11%) तथा 100 रू (0.39%) की लागत आई। स्पष्ट है कि, सोयाबीन उत्पादन की कुल लागत 24,078 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) तथा ओ.पी.सी. लागत 15,390 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) दर्ज की गई है।

## (3) रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन की समग्र लागत एवं लाभ का विवरण

रेशम उत्पादन की सम्पूर्ण प्रक्रिया शहतूत के उद्यान की स्थापना, उद्यान से पत्तियों का उत्पादन तथा ककून उत्पादन का सम्मिश्रण है, अतः शोधार्थी द्वारा रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन के प्रत्येक भाग का अलग–अलग विश्लेषण करने के पश्चात समग्र लागत एवं लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण किया जो कि निम्न तालिका क्रमांक 3 में वर्णित है।

**तालिका क्रमांक 3 – रतलाम जिले में रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन की समग्र लागत एवं लाभ का तुलनात्मक विवरण (प्रति एकड प्रति वर्ष)**

| क. | विवरण | रेशम उत्पादन | | सोयाबीन उत्पादन | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | कुल राशि | ओ.पी.सी. राशि | कुल राशि | ओ.पी.सी. राशि |
| 1 | भूमि का औसत क्षैत्रफल | 01 | 01 | 01 | 01 |
| 2 | औसत उत्पादन ( प्रति एकड प्रति वर्ष ) | 139 | 139 | 417 | 417 |
| 3 | औसतन फसलों की संख्या ( प्रति एकड प्रति वर्ष ) | 03 | 03 | 01 | 01 |
| 4 | औसत लागत ( प्रति एकड प्रति वर्ष ) | 71,135 | 13,361 | 24,400 | 15,390 |
| 5 | औसत लागत ( प्रति किलो ग्राम ) | 511.76 | 96.12 | 58.51 | 36.90 |
| सकल आय ( प्रति एकड प्रति वर्ष ) | | | | | |
| 6 | उत्पादन से प्राप्त औसत आय | 16,110 | 16,110 | 17,100 | 17,100 |
| 7 | औसत उत्पादन लागत ( प्रति एकड प्रति वर्ष ) | 71,135 | 13,361 | 24,400 | 15,390 |
| 8 | शुध्द लाभ / हानि | – 55,025 | 2,749 | – 7,300 | 1,710 |
| **9** | **लागत–लाभ अनुपात** | **1 : 0.22** | **1 : 1.20** | **1 : 0.70** | **1 : 1.11** |

स्त्रोत – सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त समंको के आधार पर

तालिका क्रमांक 3 में प्रस्तुत रेशम तथा सोयाबीन उत्पादन के ऑकडों की तुलना से स्पष्ट है कि, सोयाबीन के उत्पादन में रेशम उत्पादन की तुलना में मानव श्रम, पशु श्रम, खाद, रासायनिक उर्वरक तथा कार्यशील पूंजी पर कम व्यय होता है। केवल अन्य व्यय में सोयाबीन के उत्पादन में रेशम उत्पादन की तुलना में अधिक व्यय होता है।

तालिका क्रमांक 3 में गणना के आधार पर प्राप्त आँकडों से स्पष्ट है कि, जिले में हितग्राहियों के द्वारा रेशम की औसतन 3 फसलें (प्रति वर्ष प्रति एकड) ली जाती है, जबकि सोयाबीन की मात्र 1 फसल (प्रति वर्ष प्रति एकड) का उत्पादन किया जाता है। जिले में औसतन 139 किलोग्राम (प्रति वर्ष प्रति एकड) रेशम का उत्पादन होता है, जबकि सोयाबीन का औसतन 417 किलोग्राम (प्रति वर्ष प्रति एकड) उत्पादन होता है।

कुल लागत विधि से जिले के हितग्राहियों को रेशम उत्पादन से औसतन 16,110 रू की सकल आय होती है और इस उत्पादन में 71,135 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) की औसत लागत दर्ज की गई है। इस आधार पर प्रति किलो रेशम की औसतन लागत 511.76 रू है, जबकि कुल लागत विधि से जिले के हितग्राही को सोयाबीन के उत्पादन से 17,100 रू की सकल आय हुई है और इसके उत्पादन में 24,400 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) की औसत लागत दर्ज की गई है। इस आधार पर प्रति किलो सोयाबीन की औसतन लागत 58.51 रू है।

तालिका क्रमांक 3 में ओ.पी.सी. गणना के आधार पर प्राप्त आँकडों से स्पष्ट है कि, जिले के हितग्राही को रेशम उत्पादन से औसतन 16,110 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) की सकल आय हुई है और इस उत्पादन में औसतन 13,361 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) की लागत दर्ज की गई है। इस आधार पर प्रति किलो रेशम की औसत लागत 96.12 रू है। जबकि ओ.पी.सी. गणना के आधार पर जिले के हितग्राही को सोयाबीन के उत्पादन से औसतन 17,100 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) की सकल आय हुई है और इस उत्पादन में औसतन 15,390 रू (प्रति वर्ष प्रति एकड) की लागत दर्ज की गई है। इस आधार पर प्रति किलो सोयाबीन की औसत लागत 36.90 रू है।

## निष्कर्ष

रतलाम जिले में प्रति एकड प्रति वर्ष रेशम (ककून) की 03 फसले उत्पादित की जाती है, जिससे औसतन 139 किलोग्राम रेशम का उत्पादन होता है, जबकि रेशम की तुलना में सोयाबीन की प्रति एकड प्रति वर्ष मात्र 1 फसल ली जाती है, जिससे औसतन 417 किलोग्राम सोयाबीन का उत्पादन प्राप्त होता है। उपरोक्त तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट है कि, कुल लागत गणना के आधार पर रेशम की औसतन उत्पादन लागत 71,135 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष ), सोयाबीन की औसतन उत्पादन लागत 24,400 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) तुलना में अधिक दर्ज की गई है, जबकि ओ.पी.सी. गणना के आधार पर रेशम उत्पादन की लागत 13,361 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) सोयाबीन उत्पादन की लागत 15,390 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) की तुलना में कम दर्ज की गई है।

गणना से स्पष्ट है कि, कुल लागत गणना के आधार पर हितग्राही को रेशम उत्पादन में 55,025 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) की हानि का वहन करना पडता है, किन्तु ओ.पी.सी गणना के आधार पर हितग्राही को रेशम उत्पादन में 2,749 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) की शुध्द आय प्राप्त होती है। इस प्रकार कुल लागत गणना के आधार पर जिले में रेशम उत्पादन में लागत – लाभ अनुपात 1 : 0.22 प्राप्त होता है जो कि 1 रू पर 22 पैसे की आय को व्यक्त करता है, वहीं

दूसरी ओर ओ.पी.सी गणना के आधार पर जिले में रेशम उत्पादन में लागत – लाभ अनुपात 1 : 1.20 प्राप्त होता है जो यह दर्शाता है कि, हितग्राही को 1 रू पर 1 रू 20 पैसे की आय प्राप्त होती है।

कुल लागत गणना के आधार पर हितग्राही को सोयाबीन उत्पादन में 7,300 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) की हानि का वहन करना पडता है, जबकि ओ.पी.सी गणना के आधार पर 1,710 रू (प्रति एकड प्रति वर्ष) का लाभ होता है। इस प्रकार कुल लागत गणना के आधार पर जिले में सोयाबीन उत्पादन में लागत – लाभ अनुपात 1 : 0.70 प्राप्त होता है जो कि 1 रू पर 70 पैसे की आय को व्यक्त करता है, वहीं दूसरी ओर ओ.पी.सी गणना के आधार पर जिले में सोयाबीन उत्पादन में लागत – लाभ अनुपात 1 : 1.11 प्राप्त होता है, जो यह दर्शाता है कि, हितग्राही को 1 रू पर 1 रू 11 पैसे की आय होती है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि, रतलाम जिले के हितग्राहियों को सोयाबीन की तुलना में रेशम उत्पादन से अधिक लाभ प्राप्त होता है। जहॉ हितग्राही मौसम के अनुसार वर्ष में सोयाबीन की मात्र एक फसल ही ले पाता है, वहीं हितग्राही रेशम उत्पादन को अपनाकर वर्ष में रेशम की 3 या उससे अधिक फसल ले सकता है और सोयाबीन की तुलना में अधिक आय प्राप्त कर सकता है। रतलाम जिले के हितग्राही रेशम उत्पादन को अपनाकर अपनी आमदनी में वृध्दि कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते है। इस प्रकार रेशम उत्पादन जिले के हितग्राहियों के लिए एक वरदान स्वरूप आय एवं रोजगार का स्त्रोत है।

**REFERENCES**

**[1]** Raman D.V., 1987, Economics of Sericulture and Silk industry in India, pp. 10.
**[2]** https://inserco.org
**[3]** Masrat S. and Tripathi A.K., 2017, International Journal of Business and Administration, Reserch review, 1: pp. 81.